डरना मना है

मुर्दे की मौत

हेमेन्द्र कुमार राय़

अनुवादक

जयदीप शेखर

Cover Photo Credit: Image by Freepik

मुर्दे की मौत

बँगला डरावनी कहानी 'मड़ार मृत्यु' का हिन्दी अनुवाद

मूल लेखक

हेमेन्द्र कुमार राय

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW COPY

जगप्रभा

Cover Photo Credit:
front-view-spooky-character-posing_59232509. Image by freepik

-: eBook :-
Murde ki Mout: The Death of a Corpse
Hindi translation of the Bengali horror story 'Morar Mrityu.'
Original author: Hemendra Kumar Roy (1888-1963)
Hindi translation: Jaydeep Das
(Pen name- Jaydeep Shekhar)
Copyright © 2023 Translator
Published by:
JagPrabha
Barharwa (SBG), JH- 816101
jagprabha.in | jagprabha.bhw@gmail.com
Price: ₹ 75.00

हेमेन्द्र कुमार राय

(1888 - 1963)

बँगला में किशोर-साहित्य के एक लोकप्रिय कथाकार। बाल-किशोरों के लिए सैकड़ों कहानियों एवं लघु उपन्यासों की रचना की- बड़ों के लिए भी बहुत कुछ लिखा। 1930 से 1960 के दशकों में उनकी कहानियों के बिना बाल-किशोर पत्रिकाएं अधूरी-सी लगती थीं। मुख्यरूप से उन्होंने दुस्साहसिक (Adventure), जासूसी (Detective) और परालौकिक (Supernatural), कहानियाँ लिखी हैं। कहानियों में रहस्य (Mystery), रोमांच (Thrill) और भय (Horror) का ऐसा पुट होता है कि दम साधकर कहानियों को पढ़ना पड़ता है। कुछ कहानियाँ खजाने की खोज (Treasure hunt) और वैज्ञानिक कपोल-कल्पना (Science-fiction) पर भी आधारित हैं। उनकी रची 'कुमार-बिमल' और 'जयन्त-माणिक' श्रृंखलाएं अपने समय में बहुत लोकप्रिय हुई थीं- पहली दुस्साहसिक कहानियों की तथा दूसरी जासूसी कहानियों की श्रृंखला है। उनकी रची परालौकिक कहानियों को पढ़ने का अलग ही रोमांच है।

***

मुर्दे की मौत.....6
भैरव का परिचय.....6
कौन चीखा? क्यों चीखा? 9
कौन बातें करता, खाना खाता, चलता-फिरता है? 14
फिर पदचाप..... 19
भैरव की गुप्त बात क्या थी?..... 23
खाली व भरा ताबूत..... 26
चलता हुआ मुर्दा..... 31
अनोखा शवदाह 37

मुर्दे की मौत

भैरव का परिचय

जिस घटना के बारे में बताने जा रहा हूँ, उस पर कोई विश्वास करेगा या नहीं- पता नहीं। सच तो यह है कि यह विश्वास करने लायक है भी नहीं। बीसवीं सदी में कोलकाता शहर में बैठकर ऐसी घटना की कल्पना करना भी असम्भव है।

यह सही है कि कोलकाता मेडिकल कॉलेज के छात्र दिलीप कुमार सेन ने इस घटना को आद्योपान्त लिपिबद्ध कर रखा है और इसके गवाहों की भी कोई कमी नहीं है, फिर भी, सारा रहस्य स्पष्ट हो गया हो और सुलझ गया हो- ऐसा दावे से नहीं कहा जा सकता। जो घटनाएं अलौकिक होती हैं, भौतिक जगत में उनकी अस्वाभविकता का कारण खोज निकालना आसान नहीं होता। हम भी वह कोशिश नहीं करेंगे, केवल सीधे शब्दों में सारे मामले का वर्णन पाठकों के सामने रखेंगे। जो विश्वास करना न चाहें, उनके खिलाफ हमें कुछ नहीं कहना है।

दिलीप बीते चार वर्षों से कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई कर रहा था। उसे एकान्त पसन्द था, इसलिए उसने टालीगंज में एक ऐसे इलाके में डेरा ले रखा था, जहाँ घर कम और खुले मैदान, पेड़-पौधे ज्यादा थे। टालीगंज ट्राम डिपो के पीछे से जो चौड़ी सड़क सीधे गड़ियाहाट की ओर जा रही है, उसी के एक किनारे दिलीप ने किराये पर मकान ले रखा था। उसके पढ़ाई के कमरे की खिड़की से देखने पर नीला आकाश, हरे-भरे मैदान और जहाँ-तहाँ जंगलों के झुरमुट नजर आते थे- यह एक जीवन्त दृश्य होता था। कहीं कोई शोरगुल नहीं था, बस यदा-कदा द्रुतगामी मोटरगाड़ियों की कर्कश आवाज वातावरण के मौनव्रत को तोड़ने की थोड़ी-बहुत कोशिश करती थी।

इस मकान में दिलीप अकेले नहीं था। पहली मंजिल में दिलीप रहता था और दुमंजिले पर भैरव चन्द्र चौधरी नामक एक युवक रहता था। उसके साथ दिलीप का घनिष्ठ परिचय अभी नहीं हुआ था, क्योंकि वह थोड़े दिनों पहले ही यहाँ आया था।

एक दिन दिलीप कंकाल की कुछ हड्डियों तथा कुछ मोटी-मोटी किताबों को सामने रखकर अपनी धुन में पढ़ाई कर रहा था कि उसके दो दोस्त प्रताप और अवनी आकर हाजिर हुए। इन दोनों के घर टालीगंज में ही थे ओर ये अक्सर दिलीप के साथ गप-शप करने के लिए आया करते थे।

किताब से सिर उठाकर दिलीप ने कहा, "क्या बात है, सुबह-सुबह?"

प्रताप एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला, "मैं आया हूँ तुमसे गप करने और अवनी आया है अपने होने वाले जीजाजी से भेंट करने।"

दिलीप थोड़े आश्चर्य के साथ बोला, "इस घर में अवनी के होने वाले जीजाजी? क्या मतलब?"

"इस मकान में जिन भैरव चन्द्र का आविर्भाव हुआ है, उसी के साथ अवनी की बहन के रिश्ते की बात जो चल रही है!"

"अच्छा? यह तो मुझे पता ही नहीं था! यानि कि भैरवबाबू एक योग्य पात्र हैं, विवाह के बाजार में दाम है उनका?"

अवनी ने हँसते हुए कहा, "अब घटक[1] लोगों का तो यही कहना है, लेकिन प्रताप इसे नहीं मानता।"

"क्यों भला?"

प्रताप बोला, "भैरव को मैं थोड़ा-बहुत पहचानता हूँ। उसका नाम और स्वभाव- कुछ भी मधुर नहीं है।"

दिलीप बोला, "भैरवबाबू के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता, लेकिन उनके बारे में तुम्हारी आपत्ति के पीछे कारण क्या है?"

"भैरव एक घुमक्कड़ है। उसकी उम्र तीस से ज्यादा नहीं है, लेकिन इस उम्र में ही वह मिस्र, अरब, ईरान, चीन और जापान-जैसे देश घूम आया है।"

"विदेश-भ्रमण क्या बुरी बात है?"

"नहीं। लोग विभिन्न उद्देश्यों के साथ विदेश-भ्रमण करते हैं, लेकिन भैरव किसकी खोज में विदेशों में घूमता है- यह ऊपरवाला भी नहीं जानता। उसका विदेश-भ्रमण अत्यन्त सन्देहजनक है। वह जिस देश में गया है, वहाँ से तरह-तरह की प्राचीन वस्तुएं लेकर आया है। आज के जमाने का एक युवक प्रचीन वस्तुओं

---

[1] घटक- शादी-ब्याह लगवाने वाले मध्यस्थ या बिचौलिए।

का दीवाना क्यों है- यह किसी को नहीं पता। ऐसी रहस्य वाली बातें मैं पसन्द नहीं करता।"

दिलीप कौतुक से हँसते हुए बोला, "तुम अकारण ही भैरवबाबू से नाराज हो रहे हो! भैरवबाबू में प्राचीन वस्तुओं के संग्रह का शौक हो ही सकता है, इसमें मैं कुछ गलत नहीं देखता।"

प्रताप बोला, "तो फिर उसके स्वभाव का परिचय देता हूँ- सुनो। नन्दलाल को पहचानते हो न, वह भी मेडिकल कॉलेज में पढ़ता है। अभी परसों ही नन्दलाल के साथ भैरव की मारपीट हो गयी है।"

"क्यों, क्या हुआ था?"

"तुम्हें याद होगा शायद, परसों सुबह खूब बारिश हुई थी। उस समय टालीगंज की एक पतली गली से भैरव कहीं जा रहा था। गली की दूसरी तरफ से शाक-सब्जियों की बड़ी-सी टोकरी सिर पर लेकर एक बूढ़ी आ रही थी- बाजार जाने के लिए। बदमाश भैरव ने क्या किया- जानते हो? बूढ़ी बेचारी को ऐसा धक्का मारते हुए वह आगे बढ़ा कि टोकरी सहित बूढ़ी पास की नाली में मुँह के बल जा गिरी! संयोग से, नन्दलाल भी ऐन मौके पर वहाँ पहुँच गया। भैरव की निष्ठुरता देखकर नन्दलाल को गुस्सा आ गया। उसने वहीं पर भैरव की अच्छे-से धुलाई कर दी। इसके बाद से भैरव के साथ नन्दलाल की बातचीत बन्द हो गयी है। अब बताओ, इसके बाद भी भैरव के प्रति किसी के मन में श्रद्धा हो सकती है? ऐसे आदमी के साथ अवनी अपनी बहन का विवाह करना चाहता है! आश्चर्य!"

अवनी बेचारगी के साथ बोला, "क्या करूँ भाई, पिताजी की इच्छा के खिलाफ मेरा कुछ कहना क्या उचित होगा? भैरव धनी-मानी घर का है, उस पर से ग्रेजुएट! पिताजी का कहना है कि ऐसे पात्र को गँवाना ठीक नहीं! मैं आज देखा-देखी का दिन पक्का करने आया हूँ।"

प्रताप बोला, "तो फिर तुम जल्दी से जाकर भैरव चन्द्र के चन्द्रमुख का दर्शन कर आओ। मैं तब तक दिलीप का स्टोव जलाकर चाय बनाने का जुगाड़ करता हूँ।"

दिलीप कंकाल की खोपड़ी को फिर हाथ में लेते हुए बोला, "देखो भाई अवनी, शादी के बाद तुम्हारी बहन सुखी होगी या नहीं- यह मैं नहीं जानता, लेकिन शादी के दिन हम पूरी-मिठाई से वंचित न हों- ध्यान रखना।"

चाय पीकर प्रताप के चले जाने के बाद दिलीप ने फिर पढ़ाई में मन लगाने की कोशिश की। उसी समय मूसलाधार वर्षा उतरी। टालीगंज के उस निर्जन मैदान की निस्तब्धता आँधी-वर्षा के शोर से भर गयी। दिलीप ने उठकर खिड़कियों को बन्द किया, फिर वह दरवाजे को भी बन्द करने के लिए आगे बढ़ा। उसी समय नीचे उतर कर अवनी ने जल्दीबाजी में कहा, "अरे दरवाजा बन्द कर रहे हो क्या, मैं कहाँ जाऊँगा?"

दिलीप बोला, "कौन तुम्हें जाने कह रहा है? अन्दर आ जाओ। ईजी-चेयर पर बैठकर चुपचाप वर्षा का गान सुनो, मैं अपनी पढ़ाई-लिखाई जारी रखता हूँ।"

कमरे में आकर ईजी-चेयर पर बैठते हुए अवनी बोला, "इस वर्षा में अपनी पढ़ाई-लिखाई बन्द भी करो! चलो, कुछ गप-शप करते हैं।"

अनिच्छा होते हुए भी किताबें समेटते हुए दिलीप बोला, "आज शनि-अवतार बनकर जब तुम लोगों का आविर्भाव हुआ, तभी मैं समझ गया था कि आज मेरी पढ़ाई नहीं होगी! चलो, तुम्हारी इच्छा ही पूरी हो!"

बाहर होती रही वर्षा और अन्दर चलती रही गप-शप। एक घण्टे बाद भी बाहर की वर्षा और अन्दर की गप-शप के बन्द होने का कोई लक्षण नहीं दिखायी दिया।

घड़ी ने टन्न-टन्न कर जब ग्यारह बजाये, तब अवनी को होश आया कि घर भी लौटना है, लेकिन खिड़कियों के बन्द पल्लों से तब भी तूफानी हवाओं के साथ झमाझम वर्षा के टकराने का शोर सुनायी पड़ रहा था।

दिलीप बोला, "अबु, आज घर भूल ही जाओ। यहाँ से निकलने पर तुम्हें तैरना पड़ेगा।"

अवनी खड़े होते हुए बोला, "वही सही। पिताजी मेरा इन्तजार कर रहे होंगे, सारी बातें जानने के लिए। चलता हूँ मैं।"

कहकर अवनी ने दरवाजा खोला। साथ-ही-साथ आँधी-वर्षा की आवाज में घुली-मिली किसी कि भयभीत चीख ने कमरे में प्रवेश किया। अवनी चौंककर रूक गया।

दिलीप भी उछल कर खड़ा हो गया और विस्मित स्वर में बोला, "कौन चीखा?"

दोनों दोस्त उत्कर्ण होकर दरवाजे पर खड़े हो गये। पहले ही बताया गया है कि दिलीप के डेरे के आस-पास कोई बस्ती नहीं थी। इस आँधी-तूफान में किसी के बाहर होने का भी सवाल नहीं था। फिर किसकी चीख थी यह?

अवनी डरते हुए बोला, "वर्षा में कोई मोटरगाड़ी के नीचे तो नहीं आ गया?"

दिलीप बोला, "पागल हो! सड़क अभी पानी के नीचे है, इस हालत में कोई मोटरकार चलाने की नहीं सोचेगा।"

चीख फिर सुनायी पड़ी- लगा कि कोई बहुत ही आतंकित होकर घुटी हुई आवाज में अपनी इच्छा के खिलाफ चीख पर चीख मार रहा था! अब समझ में आया कि चीखों की आवाज दिलीप के डेरे की ऊपर वाली मंजिल से आ रही थी।

अवनी सहमते हुए बोला, "यह तो भैरवबाबू की आवाज है! वे तो कमरे में अकेले हैं, क्या देखकर चीख मार रहे हैं वे?"

दिलीप ने आगे बढ़ते हुए कहा, "यह जानने के लिए हमें दुमंजिले पर जाना होगा।"

अवनी बोला, "तो फिर मैं ही जाता हूँ, तुम यहीं ठहरो। भैरवबाबू अपने कमरे में बाहरी लोगों का आना पसन्द नहीं करते।"

"पसन्द नहीं करते! क्यों?"

"उनके कमरे की साज-सज्जा विचित्र है। उन्हें देखकर कोई बाहर का आदमी चकित ही नहीं होगा, बल्कि डर भी सकता है; उनको पागल समझ सकता है।" कहते ही अवनी तेज कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ गया।

दिलीप वहीं चुपचाप खड़े रहकर अवनी की बातों के बारे में सोचते हुए भैरव की कातर घिघियाहट सुनता रहा।

कुछ ही पलों में ऊपर से अवनी की पुकार सुनायी पड़ी, "दिलीप! दिलीप! जल्दी ऊपर आओ, जल्दी! भैरवबाबू मरने वाले हो रहे हैं!"

दिलीप तीन-चार छलाँग में सीढ़ियाँ चढ़कर भैरव के कमरे के सामने जा खड़ा हुआ। खुले दरवाजे से बिजली की रोशनी से आलोकित कमरे के अन्दर का दृश्य साफ नजर आ रहा था। कमरा देखकर सही में दिलीप की आँखें फैल गयीं! ऐसी साज-सज्जा उसने पहले कभी नहीं देखी थी!